मैं कौन हूँ

मैं ! मैं कौन हूँ !
मैं कोई भी नहीं हूँ।
कुछ भी हो सकता हूँ।

मैं देखने पर अदृश्य समन्तभद्र हूँ ।
मैं श्रवण करने पर अश्रव्य स्वर हूँ ।
मैं ग्रहण करने पर अग्रहित सत्य हूँ ।
मैं अवरुद्ध करने पर नहीं रुकने वाली ऊर्जा हूँ।
मुझे पहचाना क्या ?
मैं कोई भी नहीं हूँ।

मैं दो विकल्पों के मध्य का शून्य हूँ।
मैं दो दुःखों के मध्य का सुख हूँ।
मैं भय एवं निराशा के मध्य विश्वासनीय साहस हूँ।
मैं अशांति एवं युद्ध के मध्य का शांति हूँ।
मुझे पहचाना क्या ?
मैं कुछ भी हो सकता हूँ।

मैं अंधकार दृश्य आलोक चक्षु हूँ।
मैं दुःख अवबोध करुणा के श्रोत्र हूँ।
मैं आनन्द उत्पन्न चित्त का ताप हूँ।
मैं परकल्याण सिद्धि चित्त का बल हूँ।
मुझे पहचाना क्या ?
मैं कोई भी नहीं हूँ।

मैं सभी भव संसार का स्त्रोत हूँ।

मैं असीम आकाश की धातु हूँ।

मैं सर्वत्र दीप्तिमान प्रकाश हूँ।

मैं प्राणवायु प्रदान करने वाली हवा हूँ।

मैं काय धातु पोषण की अग्नि हूँ।

मुझे पहचाना क्या ?

मैं कुछ भी हो सकता हूँ।

मैं तुम्हारे चित्त धारा में स्थित शरण स्थान हूँ।

मैं प्रयत्न रहित अनायास सिद्ध का ज्ञान हूँ।

मैं अनिरोध स्वभाव उदय कौशल का बल हूँ।

मैं करुणा परकल्याण का कर्म हूँ।

मुझे पहचाना क्या ?

मैं कोई भी नहीं हूँ।

मैं मैत्री चित्त युक्त एक मां हूँ।

मैं विश्वासनीय एक बन्धु हूँ।

मैं शत्रुओं से रक्षा करने वाली शक्ति हूँ।

मुझे पहचाना क्या ?

मैं कुछ भी हो सकता हूँ।

मैं गृह रहित तुम्हारा घर हूँ।

मैं लाचार तुम्हरा बन्धु हूँ।

मैं बल रहित तुम्हरी शक्ति हूँ।

मैं दीन तुम्हरा धन-सम्पत्ति हूँ।

मैं स्वरुप दर्शन का आइना हूँ।

मुझे पहचाना क्या ?

मैं ! मैं कौन हूँ !

मैं कोई भी नहीं हूँ।

कुछ भी हो सकता हूँ।

तेन्ज़िन वाङ्ग्यल रिनपोछे के द्वारा अबाबा से ०६.२४.१६